श्री कामेश्वर सिंह "सहायक प्रोफेसर"
राजनीति विज्ञान, रोहतास महिला कालेज सासाराम

वर्ग- बी० ए० पार्ट- III 'प्रतिष्ठा'; पत्र- VI
राजनीतिक विचारक- डॉ० पुखराज जैन
यूनिट न० - 24; दिनांक - 14-05-2020,

अरस्तू द्वारा प्लेटो की आलोचना का शेष भाग :-

(iii) संपत्ति के साम्यवाद का खंडन =>

प्लेटो ने अपनी आदर्श राज्य में कंचन और कामनी दोनों पर प्रतिबंध लगाया है। उसने सैनिक एवं दार्शनिक वर्ग पर व्यक्तिगत संपत्ति पर प्रतिबंध लगाया है। उसने कहा है कि उन्हें न अपना घर होगा न अपनी जमीन और न सोना चाँदी ही। वे सार्वजनिक भवन में निवास करेंगे तथा वस्तुओं का उपयोग सामूहिक रूप से करेंगे इन सारी आवश्यकताओं की पूर्ति कृषक वर्ग द्वारा किया जाएगा,

अरस्तू ने प्लेटो की इस योजना का भी कई कारणों से खंडन किया है।

(1) सामूहिक संपत्ति में संपत्ति सामूहिक रूप से उपेक्षा की जाती है। सबकी संपत्ति किसी की संपत्ति नहीं होती है।

Scanned by CamScanner

(ii) सामूहिक संपत्ति की व्यवस्था में अधिक उत्पादन करने की प्रेरणा समाप्त हो जाती है। व्यक्ति तभी अधिक क्षमता परिश्रम - रुचि से काम करता है जब उसे व्यक्तिगत लाभ होने की आशा रहती हैं। वहीं व्यक्ति सार्वजनिक काम करने में जी चुराता है। अतः इससे उत्पादन कम हो जाता है।

(iii) सामूहिक संपत्ति की व्यवस्था वस्तुओं का वितरण करना भी कठिन होता है क्योंकि यदि सबको समान रूप से दिया जाए तो कुछ लोग यह कहने लगेंगे कि उन्हें उतना नहीं मिला जितना कि उन्होंने परिश्रम किया था। यदि परिश्रम के अनुपात में वितरण किया जाए तो कुछ लोग इसे गलत कहेंगे और समाज में असंतोष, संदेह, ईर्ष्या, द्वेष और संघर्ष की भावना भी फैलेगी।

(iv) सामूहिक संपत्ति में सदा लड़ाई झगड़ा होने की संभावना होती है। यह कहावत चरितार्थ है कि "साझे की हड़िया चौराहे पर ही फूट जाती है" अत्यधिक संपर्क और मिलने जुलने से ही झगड़े होते हैं। मनुष्य अपने पड़ोसियों के साथ शांति पूर्वक तभी रह सकते हैं जब वे बहुत ही वस्तुओं के हेतु एक दूसरे पर निर्भर न करें। परंतु साम्यवादी योजना मनुष्य को ठीक उसी जगह एक दूसरे के संपर्क में लाती है जहाँ संघर्ष होने की अधिक संभावना है। अतः अरस्तू के अनुसार यह आशा दुराशा ही है कि सामूहिक संपत्ति से राज्य की एकता मजबूत होगी।

Scanned by CamScanner

(V) प्लेटो ने भारतीय चोरी - डकैती जाल - फरेब हत्या - स्वार्थ आदि कुकर्मों एवं बुराइयों को समाज से दूर करने के हेतु व्यक्तिगत संपत्ति का उन्मूलन कर सामूहिक संपत्ति की योजना प्रस्तुत की है। लेकिन अरस्तु ने प्लेटो के इस मत का खंडन किया है और कहा है कि ईर्ष्या द्वेष, स्वार्थ, लालच, शोषण आदि सामाजिक बुराइयों का कारण व्यक्तिगत संपत्ति नहीं बल्कि मानव प्रकृति की दुष्टता है। अरस्तु के अनुसार समाज जो है आध्यात्मिक व्याधि से ग्रस्त है। आर्थिक व्याधि से नहीं। अतएव आध्यात्मिक औषधी से ही आध्यात्मिक व्याधि दूर हो सकता है। जो कि शिक्षा से संभव है।

(Vi) अरस्तु ने यह भी कहा है कि इतिहास में इस असाम्यवादी व्यवस्था कहीं देखने को नहीं मिलता है अतएव ऐतिहासिक अनुभव के आधार पर अरस्तु प्लेटो के आलोचना करता है।

(Vii) अरस्तु ने यह भी कहा है कि प्लेटो यदि साम्यवाद को अच्छा मानता है तो वह इसे केवल सैनिक और दार्शनिक वर्गों पर ही क्यों लागू करता है ? इसे उत्पादक वर्ग पर क्यों नहीं लागू करता ?

Scanned by CamScanner

(viii) अरस्तू ने एक आलोचना यह भी कि है कि एक ओर तो प्लेटो राज्य के सभी लोगों को प्रसन्न और आनंदित करना चाहा है दूसरी ओर उसने संरक्षकों के व्यक्तिगत संपत्ति से प्राप्त होनेवाले आनंद से वंचित कर दिया है जो अनुचित और अन्यायपूर्ण है।

अरस्तू द्वारा प्लेटो के साम्यवाद के विरुद्ध दिए गए तर्कों का निष्कर्ष है कि व्यक्तिगत संपत्ति मनुष्य के व्यक्तित्व के विकास का माध्यम, आनंद का साधन और नैतिक गुणों का स्रोत है अतएव इसका उन्मूलन नहीं होना चाहिए। सामाजिक कलह का कारण व्यक्तिगत संपत्ति नहीं, मानव प्रकृति की दुर्बलता है इसलिए समाज का सुधार शिक्षा द्वारा किया जाना चाहिए, संपत्ति की साम्यवादी व्यवस्था की स्थापना पर नहीं।

The End

Khushi.

Scanned by CamScanner